IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 10, Issue , 10 2021

आत्माकल्याण के लिए त्याग की अवधारणा

(वैदिक एवं प्रशिष्ट संस्कृत साहित्य के विशेष संदर्भ में)

***डॉ. महेश जी. पटेल**

सहायक प्रोफेसर, स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर

प्रवीणकुमार कलूभाई बारिया, +पीएच.डी शोधछात्र, स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग,
सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर

सारांश

संसार के रहस्यों को समझना तलवार की धार पर चलने के समान है। जो व्यक्ति जन्म-मरण, सुख-दुःख, मोह-माया, काम-क्रोध आदि के चक्र में भटकता रहता है, उसकी जीवन यात्रा समाप्त हो जाती है। जिस प्रकार कस्तूरी मृग अपनी नाभि में सुगन्धित पदार्थ होने के बावजूद इधर-उधर भटकता रहता है और अंततः निराश हो जाता है, उसी प्रकार मनुष्य भी सुख और शांति की आशा में इधर-उधर भटकता रहता है, किन्तु अंत में उसका मन स्थिर हो जाता है और विचार नष्ट हो जाते हैं । वह समझ नहीं पाता और लोगों के बहकावे में आकर सुख-शांति पाने की नीयत से काम करता दिखाई देता है। मनुष्य सुखी जीवन जीने के लिए अनगिनत प्रयास करता है, परन्तु वर्तमान सुख-सुविधाओं के मोह के कारण वह माया के जाल में फंस जाता है और विभिन्न साधनों के प्रयोग से दिन-प्रतिदिन पतन की ओर धकेला जाता है । भौतिक सुख-सुविधाओं के कारण व्यक्ति को अस्थायी सुख तो मिल जाता है, लेकिन चूंकि यह सुख लंबे समय तक नहीं टिक सकता, इसलिए व्यक्ति सच्चे सुख की तलाश में रहता है । अंततः, ऐसे भ्रम के सागर को पार करने के लिए, वह वैदिक साहित्य जैसे हमारे वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक ग्रंथ, उपनिषद, भारतीय दर्शन, रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता आदि से शास्त्रीय साहित्य के मंच पर जाता है । जिसमें वह उच्च लक्ष्य के साथ मोक्ष का ज्ञान प्राप्त करता है। ऐसा ज्ञान भगवान कृष्ण ने अर्जुन को और आदिजगतगुरु शंकराचार्य ने पूरे भारत में भ्रमण करके दिया था। जिसके माध्यम से मनुष्य अपना उद्धार कर सकता है । ऐसा मोक्ष मनुष्य तभी प्राप्त कर सकता है जब उसके जीवन में त्याग की भावना हो । उसके लिए वेदान्त में इस लोक और परलोक के फल, भोग, वैराग्य और छह प्रकार की सम्पदाओं की चर्चा की गई है । सच्चे ज्ञान की आवश्यकता उस विद्वान व्यक्ति के लिए

अत्यंत आवश्यक हो जाती है जो भौतिक सम्पत्ति का त्याग करने तथा संसार के सुखों का आनंद लेने के लिए पूरी तरह तैयार है ।

कीवर्ड: आत्मा का ज्ञान, मुक्ति, जीवन दर्शन, माया, जीवन और मृत्यु, शांति, कल्याण, भौतिक साधनों का त्याग, संसार का ज्ञान, वैराग्य ।

शोध के उद्देश्य

- संस्कृत साहित्य में त्याग के तत्व का विश्लेषण करना ।
- वेदों, उपनिषदों, दर्शनों और श्रीमद्भगवद्गीता में भौतिक वस्तुओं के सुख-दुःख में निहित त्याग सिद्धांत को प्रकट करना ।
- मानव जीवन में भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख में त्याग के महत्व को स्पष्ट करना ।

आत्मा के लिए त्याग की अवधारणा

उपनिषद कोरा ज्ञान या मात्र तर्क-वितर्क नहीं हैं, बल्कि मनुष्य को उच्च आध्यात्मिक स्तर पर ले जाने का एक प्रयास हैं। यदि कोई ऐसी चीज़ है जो मनुष्य को आत्मतत्व का ज्ञान देकर दुःखों से पार ले जा सकती है, तो वह उपनिषद ही हैं। उपनिषद विश्व में एक ऐसे साहित्य के रूप में अग्रणी रहे हैं जो आत्मा के शाश्वत, अपरिवर्तनीय और अविनाशी सार का वैज्ञानिक विवेचन करता है। अनेक युगों के बाद भी, यह ज्ञान आज भी ताज़ा है और सम्पूर्ण मानवता के लिए मार्गदर्शक बना हुआ है। यदि व्यक्ति जीवन में शांति चाहता है तो उसे सबसे पहले सांसारिक सुखों का त्याग कर सुखों का भोग करना चाहिए, लेकिन भोग योग्य वस्तुओं से दूर रहना चाहिए। उसे कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि क्षणिक सुख देने वाली वस्तुएं केवल उसके लिए हैं, त्याग की ओर पहला कदम त्याग ही है। इसीलिए ईशावास्योपनिषद् में संसार की सभी जड़ और चेतन वस्तुएं ईश्वर की हैं। इसलिए इसका त्याग करके इसका आनंद लेने की शिक्षा दी गई है। मनुष्य को दूसरों के धन का लोभ नहीं करना चाहिए, उसे लोभ का त्याग करना चाहिए। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा: मा गृध: कस्यस्विद् धनम्। मनुष्य को न केवल अपने द्वारा अर्जित सुख के साधनों का भोग करना चाहिए, बल्कि त्यागपूर्वक उनका भोग भी करना चाहिए। अर्थात् त्यागपूर्वक भोगने का गुण विकसित करना चाहिए। इसके अलावा, संसार में जो कुछ भी है, वह ईश्वर द्वारा व्याप्त होने योग्य है । यह सब त्याग दो और अपनी आत्मा की रक्षा करो। लोभ-लालच मत करो। इस संसार में किसका धन है ? वेदों में ईश्वर का यह पवित्र आदेश मनुष्यों तक पहुँचा दो कि सर्वज्ञ और सर्वहितकारी ईश्वर ही सब कुछ में व्याप्त है । फिर

आनंद या सुख का क्या अर्थ है ? इसके अलावा, कठोपनिषद् में यम और नचिकेता के संवाद में, सुखों के लघु सुखों के विषय पर चर्चा मिलती है। पिता वज्रश्रवा ने विश्वजित यज्ञ किया, और इस यज्ञ में उसने श्रेष्ठ गायें रख लीं और बूढ़ी, मुरझाई हुई और अनुपयोगी गायें ब्राह्मणों को देने लगा। यह देखकर नचिकेता अपने पिता के पास गया और पूछा, "आप मुझे किसे देंगे ?" तीसरी बार माँगने पर वे क्रोधित हो गए । मृत्यवे त्वां ददामि इति । मैं तुम्हें यमराज को सौंपता हूँ।" यह वचन मानकर नचिकेता यम की नगरी की ओर चल पड़ता है। उसे यम के द्वार पर तीन रात भूखा-प्यासा रहना पड़ता है। जब यमराज आकर बदले में तीन वरदान माँगते हैं, तो नचिकेता तीसरा और अंतिम वरदान माँगता है, जो है मृत्यु। यमराज द्वारा तरह-तरह के प्रलोभन दिए जाने पर नचिकेता कहता है, श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत्सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः। हे यमराज! क्षणभंगुर सुख भविष्य में रहेंगे या नहीं! ये मनुष्य की समस्त इन्द्रियों की चमक को क्षीण कर देते हैं। इसी कारण मनुष्य को कल्याणकारी ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो पाती; वह ऐसे कार्यों में लगा रहता है जिनसे उसकी आत्मा का कल्याण नहीं होता । जब मनुष्य के हृदय से सभी इच्छाएं निकल जाती हैं, तब वह अमर हो जाता है और ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है । न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्याः। इस मृत्युलोक में धन-संपत्ति मनुष्य को तृप्त नहीं कर सकती। इसलिए नचिकेता यम के सभी प्रलोभनों को अस्वीकार कर देता है और दीर्घायु, पृथ्वी, सुंदर स्त्री, यज्ञ फल आदि को स्वीकार नहीं करता । श्वेताश्वेतर उपनिषद में भी मन को शुद्ध करने के साधनों के माध्यम से मोक्ष प्राप्ति की बात कही गई है, जिसके लिए ब्रह्मांड में मौजूद सुख देने वाले साधनों का त्याग करने की बात कही गई है; स्त्र्यालोकालम्मविगम् । महिलाओं को देखने और छूने आदि से बचें। त्यागः परिग्रहाणाम् च । सुखों की खोज का त्याग करना । विषयेन्द्रियसंरोधस्तन्द्रालस्यविवर्जम् । विषयों के प्रति काम इन्द्रियों को रोकना, निद्रा और आलस्य का त्याग करना, रजोगुण और तमोगुण के साथ सत्वगुण को बढ़ाने से तथा किसी भी प्रकार की इच्छा न रखने से मन शुद्ध हो जाता है और ऐसा योगी या साधक ब्रह्मज्ञान या मोक्ष प्राप्त कर सकता है । इस संबंध में, ऋषियों द्वारा आत्मा के कल्याण हेतु अपनी पत्नी और गृहस्थी का परित्याग करने के उदाहरण भी मिलते हैं। बृहदारण्यक उपनिषद में याज्ञवल्क्य और मैत्रेय के संवाद के माध्यम से त्याग का महत्व स्पष्ट किया गया है । जब याज्ञवल्क्य अपनी आत्मा के कल्याण के लिए अपनी सारी संपत्ति त्यागकर संन्यास लेने का विचार कर रहे थे, तब उन्होंने अपनी पत्नी से कहा: अहमस्मात् स्थानादस्मि । मैं सब कुछ छोड़कर जा रहा हूँ। यहाँ भौतिक साधनों से मोक्ष प्राप्ति अथवा आत्मा-परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करना असम्भव है, अतः त्याग द्वारा आत्मा के कल्याण के लिए कार्य करना अति उत्तम माना गया है । संसार में लक्ष्मी की चंचलता के संबंध में

भगवान बुद्ध ने वैराग्य का उपदेश देते हुए कहा है कि संसार की वस्तुएँ क्षणिक हैं और उनसे प्राप्त होने वाला सुख भी क्षणिक है। ऐसे सुख के लिए प्रयत्न करना आवश्यक नहीं है, इसलिए इच्छाओं का त्याग कर देना चाहिए । उन्होंने यह समझाते हुए कि लालसा ही सभी दुखों की जड़ है, लालसा को त्यागने का संदेश दिया ।

भगवद्गीता में भगवान अर्जुन से कहते हैं कि मया ततमिदं सर्वं जगत्व्यक्तमुर्तिना। यह सम्पूर्ण जगत् मेरे अव्यक्त स्वरूप से व्याप्त है । मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः। सभी प्राणी मुझमें हैं; किन्तु मैं उनमें नहीं हूँ और वे मुझमें नहीं हैं। अतः सभी कर्म आत्मा के कल्याण के लिए ही करने चाहिए । साथ ही, मनुष्य के कर्तव्य के विषय में वे कहते हैं, "हे अर्जुन! मैं समस्त प्राणियों का बीज हूँ; क्योंकि मेरे बिना कोई भी जीव नहीं है, अर्थात् मैं ही समस्त जीव हूँ। मैं अपने एक अंश से सम्पूर्ण जगत को धारण कर रहा हूँ।" इस बात को समझकर तथा सदैव स्मरण रखते हुए, मनुष्य को इस संसार के विषयों का त्यागपूर्वक भोग केवल अपने कर्तव्य पालन हेतु ही करना चाहिए। किन्तु वर्तमान समय में, चूँकि मनुष्य आधुनिक असुविधाओं में फँसकर सांसारिक बंधनों में उलझा हुआ है, चूँकि उसे त्याग की समझ बहुत कम है, इसलिए वह कुछ भी करने को तैयार नहीं है। इसलिए भगवान कहते हैं कि यही मनुष्य का परम लक्ष्य होना चाहिए। मन को विषयों में आसक्त न होने देना ही सबका कल्याण है, यही जीवन जीने का एकमात्र सच्चा मार्ग है।

आदिगुरु शंकराचार्य ने भी कहा है कि, "ईश्वर प्राणी जगत की आत्मा है। ऐसी भावना वाले व्यक्ति को केवल संतान की इच्छा, धन की इच्छा, जन की इच्छा आदि इच्छाओं को त्यागने का ही अधिकार है, कर्म में उसका कोई अधिकार नहीं है।" यह त्याग निष्क्रिय आत्मा के निर्माण में सहायक है, अतः इस त्याग से अपनी आत्मा की रक्षा करो। परित्यक्त या मृत पुत्र या सेवक, अपने सम्बन्धी को खोकर, स्वयं का अनुसरण नहीं करता । इसीलिए श्रुति का अर्थ है; त्याग से भोग प्राप्त करो, अर्थात् त्याग से अपनी आत्मा की रक्षा करो। इसके अतिरिक्त, वैराग्य से साधक के कर्मों का इस लोक और परलोक में फल और भोग से वैराग्य से मन शुद्ध होता है । साथ ही, मन की शुद्धि या मन की शांति के छह प्रकार के साधन प्राप्त होते हैं। जो उपरी में देखा जाता है। उपरी का अर्थ है सुख भोगने का इतिहास। मन और इंद्रियों के वश में होने के बाद, वासना का लोप होने लगता है। शम और दम शब्दों के उच्चारण के बाद, साधक बहुत कम प्रयास से ही मन को सुख से दूर कर सकता है । ऐसे अनुशासन के फलस्वरूप वृत्तियाँ सभी भोगों से विमुख हो जाती हैं, मन उनका उपभोग करने से कतराने लगता है, जिसे लोभ कहते हैं। और जब तक लोभ है, तब तक ज्ञान का अधिकार नहीं है ।

इस अपराति का अर्थ है कि व्यक्ति को अपनी पत्नी, पुत्र, धन और देश का त्याग करना पड़ता है और बाद में योगाभ्यास द्वारा ज्ञान प्राप्त करना पड़ता है, अतः अपराति बाह्य त्याग है। इसी कारण, वैरागी पुरुष सर्प के समान सदैव मनुष्यों के संग की इच्छा नहीं करता । जो सुन्दर स्त्री को शव के समान त्यागने की इच्छा रखता है और फलस्वरूप दुःखदायी वस्तुओं को विष के समान समझता है, वह परमहंस विजयी होता है और मोक्ष प्राप्त करता है । विवेक चूड़ामणि में मोक्ष की बात करते हुए कहा गया है कि; विद्वान पुरुष को सभी सुखों का त्याग करके गुरुजनों, जो कुलीन एवं महापुरुष हैं, के चरणों में जाना चाहिए तथा उनके उपदेशों के अनुसार मोक्ष के लिए प्रयत्न करना चाहिए । संसार में अपनी इच्छा से विकारों में फंसे हुए सभी मनुष्यों को बाहर निकालने के लिए जो प्रयास किए जाते हैं, वे साहित्य में समाहित हैं। वे उन सबका अध्ययन करते हैं और उनमें बताए गए कार्यों को करने का प्रयास करते हैं ।

संदर्भग्रंथ सूची

1 एकादशोपनिषद् - विद्यामार्तंड डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, विजयकृष्ण लखनपाल, नई दिल्ली - ४८, नविन संस्करण, पृष्ठ-

१७-१८

2 कठोपनिषद् - डॉ. रामरङ्ग शर्मा, भारतीय विद्या प्रकाशन वाराणसी, प्रथम संस्करण-१९७९,पृष्ट-४२-४३.

3 श्वेाश्वतरोपनिषद् - घनश्यामदास जालान, गीताप्रेस गोरखपुर, प्रथम संस्करण सं-१९९५, पृष्ठ-१७.

4 બૃહદારણ્યક ઉપનિષદ, શ્રી વાસુદેવ મહાશંકર જોષી, સસ્તું સાહિત્ય વર્ધક કાર્યાલય-અમદાવાદ, પ્રથમ આવૃત્તિ-

સંવત ૨૦૨૦ પૃષ્ઠ-૮૭૭.

5 सर्वदर्शनसंग्रह: - डॉ. उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी -२२१००१, ज्ये.शु.४,२०२१, पृष्ठ-८९.

6 શ્રીમદભગવદ્ગીતા, સ્વામી રામસુખદાસ, ગોવિંદભવન કાર્યાલય, ગીતા પ્રેસ, ગોરખપુર – ૨૭૩૦૦૫, પ્રથમ આવૃત્તિ-

૧૯૯૩ પૃષ્ઠ- ૫૬૬.

7 શ્રીમદ્ શંકરાચાર્યનું તત્વજ્ઞાન, ડૉ. સી. વી. રાવળ, યુનિવર્સિટી ગ્રંથનિર્માણ બોર્ડ, ગુજરાત રાજ્ય, અમદાવાદ-૬ શ્રીમદભગવદ્ગીતા, તદૈવ, પૃષ્ઠ- ૫૭૦.

8 श्री शंकराचार्य चरित्र - मणिशंकर हरिकृष्ण शास्त्री, ગુજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય-અમદાવાદ, બીજી આવૃત્તિ-સંવત-શ્રીમદભગવદ્ગીતા, તદૈવ, પૃષ્ઠ- ૫૭૫.

9, विवेकचूड़ामणि: - मनोहरलाल शर्मा मनोहरलाल शर्मा-१९२ चित्तरंजन एवन्यू कलकता-७ प्रथमावृत्ति - १००० विक्रम संवत् -२०२२ पृष्ठ-०९

* आसिस्टन्ट प्रोफ़ेसर, अनुस्नातक संस्कृत विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभविद्यानगर, आणंद, गुजरात । maheshgpatel78@gmail.com

+ शोधार्थी, अनुस्नातक संस्कृत विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभविद्यानगर, आणंद, गुजरात । bariyapravin07@gmail.com